विद्याभवन, बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

विषय- हिंदी ***दिनांक-23/06/2020***
वर्ग- पंचम ***विषय-शिक्षिका— नीतू कुमारी***
सुमन एक उपवन के

सुप्रभात बच्चों,

पिछली कक्षा में आपने ' सुमन एक उपवन के' कविता पढ़ा। हमें पूरा विश्वास है कि आप कविता समझ लिए होंगे। आज आपको उसी कविता का भावार्थ जानना है, जो इस प्रकार है:—

द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी की प्रस्तुत कविता का भावार्थ है कि— हम सब एक ही बग़ीचे के फूल हैं। हम सब एक ही धरती पर पैदा हुए हैं। एक ही धूप सबको मिली है। हम सबको पानी भी एक ही मिला है। हम सबका एक ही सूरज है जो हमारी हृदय की कलियाँ खिलाती हैं। एक ही चाँद की चाँदनी में हम नहाते हैं। हमें एक जैसी आवाज़ मिली है। हम सबके रंग-रूप अलग-अलग हैं लेकिन हम सबने इस संसार की बगिया की मिलकर शोभा बढ़ाई है। हम सबने परेशानियों में भी हँसकर जीना सीखा है। एक धागे में बँधकर गले का हार बनना सीखा है। सबके लिए हमारी सुगंध है। हम धनी- निर्धन सबके श्रिंगार हैं।

बच्चों दी गयी कविता के भावार्थ को अपनी उत्तर पुस्तिका में सुंदर एवं साफ़ अक्षरों में लिखें तथा समझने का प्रयास करें।

गृहकार्य :—
बच्चों, पेज नं— 24 में दिए गए शब्दार्थ को याद करें।